टिप्पणी

321hi13

13

आय प्रबंधन

मीना को जब पहली बार जेब-खर्च के लिये पैसे मिले तब उसे स्पष्ट था कि महीने भर की उसकी क्या आवश्यकताएँ हैं। उसने तुरन्त सोचना शुरू कर दिया। वह अपने इस पैसे से एक आइसक्रीम भी खरीदना चाहती थी।

धीरे–धीरे मीना को यह आभास हुआ कि जितने पैसे उसके पास हैं उनसे वह अपनी सारी आवश्यकताएं तो पूरी नहीं कर पायेगी। अब मीना के सामने यह समस्या थी कि वह अपने पैसे का प्रयोग किस प्रकार करे जिससे उसकी आवश्यकताएँ भी पूरी हो जाएँ और वह एक आइसक्रिम भी खरीद ले।

आपने भी कभी अपनी जिन्दगी में ऐसी स्थिति का सामना किया होगा। आपने भी चाहा होगा कि आपका पैसा सभी जरूरतों और इच्छाओं को पूर्ण कर दें। केवल इच्छा करना ही समस्या का समाधान नहीं है। समस्या का समाधान नियोजित ढंग से पैसे का उपयोग करने में है। इस पाठ में आप सीखेंगे कि पैसे का नियोजित ढंग से प्रयोग कैसे करें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित कर पायेंगे:

- पारिवारिक आय को पारिभाषित करना और उसके विभिन्न अवयव बताना;
- व्यय योजना बनाने के लिये मार्गदर्शिका तैयार करना;
- आय प्रबंधन को समझाना तथा उसकी प्रक्रिया की व्याख्या;
- पारिवारिक आय तथा व्यय का ब्योरा रखना;
- अतिरिक्त पारिवारिक आय अर्जित करने के महत्त्व तथा तरीके बताना;
- बचत और निवेश की धारणा को समझाना;
- वित्तीय संस्थाओं का आय प्रबन्धन में योगदान समझाना;
- विशेषताओं के आधार पर निवेश योजना का चयन करना।

13.1 पारिवारिक आय

चित्र 13.1

परिवार के सदस्यों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये सारे साधन आय कहलाते हैं। आय में क्या आता है? आप कह सकते हैं केवल ''पैसा'' लेकिन पैसे के अलावा ऐसी कई सेवाएँ और वस्तुएँ हैं जो कि पैसे के समान ही परिवार के लिए प्रयुक्त की जाती हैं। इस प्रकार आप आय को पारिभाषित करने के लिये कह सकते हैं, कि–

> आय किसी भी परिवार की आवश्यकताओं और इच्छाओं की पूर्ति के लिये इस्तेमाल की हुई सेवाएँ, वस्तुएँ और पैसा है।

आइये इसके बारे में कुछ और सीखें –

पैसा

पैसा हाथ में आई नकद रकम है। इसे साधारण तथा नकद आय कहा जाता है। इसके कई स्रोत हैं–

- आपके कार्यस्थल से, उदाहरण के लिये–नौकरी और व्यवसाय।
- किराये से यदि आपने पूरा या आंशिक मकान किराये पर उठाया हो।
- ब्याज से, आप अपना पैसे को बैंक में जमा करके ब्याज प्राप्त कर सकते हैं।
- घरेलू उत्पादन से, उदाहरण, अचार बना कर, खिलौने और वस्त्र बना कर उन्हें बेचने से।

वस्तुएं और सेवाएं

आपके परिवार को विभिन्न सेवाएं और वस्तुएँ भी उपलब्ध हो सकती हैं जैसे –

- आपको सरकार या मालिक द्वारा दिया गया रहने के लिये मुफ्त का मकान
- आपके कम्पनी द्वारा दी गई कार
- आपकी शाक वाटिका की सब्जियाँ
- आप अपना घरेलू कार्य स्वयं करते हैं बजाय किसी और को पैसा देकर कराने के
- आप अपने परिवार के कपड़े दर्जी को न देकर स्वयं सिलते हैं

टिप्पणी

- आप अपने उपकरणों को सही हालत में रखते हैं ताकि उन्हें ठीक करवाने का खर्चा बचा सकें

ये सभी वस्तुएँ और सेवाएँ जो आपका परिवार उपयोग में लेता है, मिल कर वास्तविक आय कहलाता है।

पारिवारिक आय = नकद आय + वास्तविक आय

आवश्यकताएँ

कमियों को पूरा करना ही आवश्यकताएँ हैं। आपको जीवित व स्वस्थ रहने के लिये भोजन की आवश्यकता होती है। अपने शरीर की रक्षा के लिये कपड़े और घर की आवश्यकता होती है।

इसलिए रोटी, कपड़ा और मकान आपकी आधारभूत आवश्यकताएँ हैं। यह आवश्यकताएँ आपको जीवित रखने के लिये आवश्यक हैं। कुछ अन्य आवश्यकताएँ भी हैं जो आपके जीवन को और आसान बनाती हैं। जैसे – एक स्थान से दूसरे स्थान पर आसानी से जाने के लिए आपको बस, साइकिल, स्कूटर या कार की आवश्यकता होती है। लेकिन यदि आपके पास इनमें से कुछ भी नहीं हैं, तो आप पैदल चलते हैं। बस, साइकिल, स्कूटर आदि आपके आवागमन को सुगम बनाता है। कुछ अन्य आवश्यकताओं की सूची बनाएं जिससे आपका जीवन आसान हो जाता है।

इच्छाएँ

जब आपकी सारी आवश्यकताएँ पूर्ण हो जाती हैं तब आप इच्छाएं पूरी करना चाहते हैं। आपकी इच्छाएं आपकी आवश्यकता नहीं हैं, लेकिन आप फिर भी उन्हें पूरा करना चाहते हैं। उदाहरण के लिए आप किसी खास मोहल्ले में तीन–बेडरूम का मकान लेने की इच्छा रखते हैं या फिर दीवार पर टांगने का कोई चित्र चाहते हैं।

आप कह सकते हैं कि आवश्यकताएं वे जरूरतें हैं जो कि जीवन को आसान बनाती हैं जबकि इच्छाओं के रहने पर आपको प्रसन्नता का अनुभव होता है। पैसे से आप अपनी आवश्यकताएँ और इच्छाएँ पूरी कर सकते हैं। जैसे–आपको एक पंखे की जरूरत है और कालीन खरीदने की इच्छा है। दोनों ही आप पैसे से खरीद सकते हैं। आपके परिवार को उपलब्ध सेवाओं और वस्तुओं से भी आपकी आवश्यकताएँ और इच्छाएँ पूरी की जा सकती हैं। आपको मकान की आवश्यकता है तो आपकी कम्पनी, मकान देकर आवश्यकता पूरी कर देती है। एक सुन्दर पोषाक की इच्छा आप स्वयं या आपकी माँ कुशलतापूर्वक सिल कर, पूरी कर देती है।

क्रियाकलाप 13.1 :- अपनी व अन्य किन्हीं दो परिवारों की आय के स्रोत का पता लगायें। अपने पाठ में दी गई सूची से तुलना करें।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 13.1

1. निम्नलिखित वाक्यों में बताएं की कौन सी नकद आय है और कौन सी वास्तविक आय–

   (a) अपने परिवार के लिये अचार बनाना .....

   (b) सब्जी का उत्पादन व विक्रय .....

   (c) आर्डर पर केक बनाना .....

   (d) कपड़े स्वयं सिलना .....

   (e) विद्यार्थियों को ट्यूशन पढ़ाना .....

   (f) कार प्रतिदिन स्वयं साफ करना .....

   (g) बैंक में जमा किये गये पैसे पर ब्याज पाना .....

   (h) अपने घर की बिजली स्वयं सुधारना .....

   (i) कम्पनी द्वारा स्कूटर प्राप्त करना .....

2. निम्नलिखित अनुच्छेद पढ़ कर उत्तर दीजिये –

   श्री लाल और श्री आनन्द को 5000/– रुपये प्रति माह, प्रति व्यक्ति मिलता है। श्री लाल को कार्यालय में खाना मिलता है और स्कूटर के लिये खर्च भी। श्री आनन्द को कार्यालय के समीप मुफ्त का मकान दिया गया है।

   (a) दोनों में से किसकी आय अधिक है?

   (b) कारण बताकर समझाइये।

13.2 व्यय

परिवार की आवश्कताओं की पूर्ती के लिए विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने के लिये खर्च किया गया पैसा ही व्यय कहलाता है।

वस्तुएँ

दैनिक जीवन में आपको विभिन्न वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है, उदाहरण के लिये खाद्य–सामग्री, पकाने के बर्तन, कपड़े धोने के लिए साबुन, प्रैस करने के लिए इस्त्री आदि। अपने घर को देखने पर आपको विभिन्न उपयोगी वस्तुएँ दिखलाई देंगी। अपने स्नानागार में रखी गई वस्तुओं की सूची बनाइये।

सेवाएँ

सेवाएँ वे उपयोगी सुविधायें हैं जिनसे आपका जीवन आसान हो जाता है। उदाहरण के लिये आप अपने दूसरे शहर में रहने वाले मित्र से बात करना चाहते हैं। आपको उसके

टिप्पणी

घर जाने की आवश्यकता नहीं है। आप घर बैठे ही उनसे फोन पर बातें कर सकते हैं। टेलीफोन सेवाओं के अलावा आप कौन–सी अन्य सेवाओं का घर में उपभोग करते हैं? हाँ, बिजली–पानी की सेवाएँ। यदि आप बाहर जाना चाहते हैं तो यातायात सेवा उपलब्ध है। यदि आप बीमार पड़ गये हैं तो सरकारी अस्पताल की सेवा प्राप्त कर सकते हैं। कुछ अन्य सेवाओं में पुलिस सुरक्षा, नालियों की सुविधा और अग्निशमन सेवा भी शामिल हैं।

अपने मुहल्ले में घूमकर देखें कि आपको कौन सी सेवाएँ उपलब्ध हैं। इन सेवाओं और वस्तुओं के एवज में आपको भुगतान करना पड़ता है। इन पर खर्च किया गया पैसा ही व्यय कहलाता है।

13.2.1 व्यय योजना को बनाने की मार्ग दर्शिका

यदि आप खर्च किए गए पैसे का भरपूर लाभ उठाना चाहते हैं तो आपको व्यय योजना बनाना आवश्यक है। योजना आपको बताती है कि पैसा सही ढंग से कैसे खर्च करें। ऐसी योजना बनाते समय आप निम्न का ध्यान रखें –

– हाथ में आई हुई आय को आप विभिन्न मदों में बाँट सकते हैं–खान–पान, कपड़े, मकान, शिक्षा, यातायात के साधन, घरेलू सेवायें और मनोरंजन।

– जैसा कि आप पहले पढ़ चुके हैं कि रोटी, कपड़ा और मकान आधारभूत आवश्यकताएँ हैं। इन्हें प्राथमिक आवश्यकताएँ भी कह सकते हैं। बाकि अन्य आवश्यकताएँ द्वितीय आवश्यकताएँ होती हैं। जाहिर है, आप पहले अपनी प्राथमिक आवश्यकता को पूर्ण करने में पैसे को खर्च करें।

  खर्च के विभिन्न मदों की महत्ता के अनुसार आप व्यय करेंगे। उदाहरण के लिये खाने की अपेक्षा यदि आप कपड़ों को ज्यादा महत्त्व देते हैं तो उसके लिये ज्यादा पैसा अलग से रखेंगे। आप शिक्षा के लिये कम पैसे खर्च करेंगे यदि आप शिक्षा को कम महत्त्व देते हैं।

– एक मद पर खर्च किया जाने वाला पैसा पूरे महीने के लिये पर्याप्त होना चाहिए। उदाहरण के लिये आपके द्वारा खान–पान के लिये आबंटित 1000/– रुपये पूरे महीने के लिये पर्याप्त होना चाहिये।

– आपकी प्राथमिक और द्वितीय आवश्यकताओं को पूर्ण करने के बाद, शेष धन आप अपनी कुछ इच्छाओं को पूर्ण करने में खर्च कर सकते हैं। इच्छाओं में जीवन के कुछ आराम शामिल होंगे। यदि पैसा फिर भी बचा है तो आप कुछ विलास की वस्तुएँ शामिल करेंगे। विलास की अपेक्षा आराम की वस्तुएँ आसानी से वहन की जा सकती हैं।

  जब आपकी मकान की समस्त आवश्यकताएँ पूर्ण हो जाती हैं तब आप चाहेंगे कि कुछ आरामदेह वस्तुएँ खरीदी जायें। जैसे कि आप एक कूलर या पंखा खरीद सकते हैं।

जब आपकी अधिकांश आरामदेह आवश्यकताएँ पूर्ण हो जाती हैं तब आप विलासितापूर्ण वस्तुओं के बारे में सोचते हैं। अब आप अपने कमरे को वातानूकूलित भी करवा सकते हैं। इस प्रकार आप संक्षिप्त में आवश्यकताओं और इच्छाओं को निम्न क्रम से लिख सकते हैं:

चित्र 13.2
प्राथमिक आवश्यकताएं

चित्र 13.3
द्वितीय आवश्यकताएं

चित्र 13.4
विलासपूर्ण वस्तुएं

– जब आपकी वर्तमान आवश्यकताएँ और इच्छाएँ पूर्ण हो जाते हैं तो आपको भविष्य की आवश्यकताओं को बारे में सोचना चाहिये। हो सकता है भविष्य की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए, ज्यादा मात्रा में धन की आवश्यकता हो। उदाहरण, विवाह। आपकी आय इस कार्य की पूर्ति के लिये पर्याप्त नहीं होगी। ऐसी स्थिति में आप क्या करेंगे? हाँ, आप अपनी आय का कुछ भाग भविष्य की आवश्यकताओं के लिये अलग से रख सकते हैं। इसे बचत कहते हैं। बचत के लिये जरूरी है कि आपका कुल खर्च कुल आय से कम हो।

चित्र 13.5

पाठगत प्रश्न 13.2

1. (√) सही का चिह्न लगाएं जहाँ खर्च करने की प्राथमिकता हो। अपने उत्तर के लिए कारण भी बताइये।

   (a) छुट्टियों में बाहर जाना या रेफ्रिजरेटर खरीदना।

टिप्पणी

(b) आइसक्रीम खरीदना या बच्चों के लिये पौष्टिक आहार खरीदना।

(c मिक्सी खरीदना या साधारण पर्दों की जगह नये सुन्दर पर्दे खरीदीना।

(d) सर्दी के लिए गरम कपड़े खरीदना या वैक्यूम क्लीनर खरीदना।

(e) मकान खरीदना या छुट्टियों में विदेश जाना।

13.3 आय प्रबंधन

आय को परिवार के लिये नियोजित व नियंत्रित ढंग से उपभोग करना ही आय प्रबंधन है।

अभी तक आपने परिवार के विभिन्न क्षेत्रों में किये गये व्यय के बारे में पढ़ा, जो कि आप अपनी आय में से करते हैं। कभी–कभी महीना खत्म होने से पहले ही आय खत्म हो जाती है। ऐसा न हो, इसके लिये आप क्या करेंगे? हाँ, आप अपनी आय को इस प्रकार व्यय करेंगे कि महीने के अंत तक आपके पास खर्च के लिए पैसा उपलब्ध हो। इस प्रकार विभिन्न मदों पर खर्च करने के लिये वितरित किया गया पैसा ही आय प्रबंधन कहलाता है।

13.3.1 आय प्रबंधन के तरीके

पाठ 10 में आपने प्रबंधन के विविध तरीकों के बारे में पढ़ा। आइये देखें कि आय प्रबंधन में इनका उपयोग किस प्रकार किया जा सकता है।

पारिवारिक आय के उपयोग का नियोजन

अपनी आय को व्यय करने की योजना के बारे में आप पहले ही पढ़ चुके हैं। व्यय करने से पूर्व ध्यान रखें कि आप अपनी आय का कुछ हिस्सा बचत के रूप में रखें।

पारिवारिक आय के उपयोग पर नियंत्रण

आप अपने व्यय पर नियंत्रण और लगाम दो तरह से रख सकते हैं–

(i) ध्यान रखें कि पैसा बर्बाद न हो। उदाहरण के लिए खरीदारी सही मात्रा में करें, जितनी परिवार के लिये आवश्यक हो ताकि पैसा बर्बाद न हो। सहकारी भण्डार या थोक विक्रेताओं से कम दाम पर सामान खरीद कर पैसा बचायें।

(ii) समय, ऊर्जा, ज्ञान व कौशल का उपयोग खरीदारी में करें। क्या आपको याद है इसे क्या कहते हैं? हाँ बिलकुल सही, यह वास्तविक आय है। अगर आपकी आय का सुनियोजित व सुनियंत्रित उपयोग होता है तो आपकी आवश्यकताओं के साथ–साथ इच्छाओं की भी पूर्ति हो जायेगी।

धन के प्रयोग का कोई तय तरीका नहीं है। एक समान आय वाले परिवारों की आवश्यकताएँ व इच्छाएँ जरूरी नहीं है कि एक सी हों। उदाहरण के लिये दो परिवारों जिनकी आय, प्रति माह 5000/– रुपये है, की आवश्यकताएँ व इच्छाएँ भी भिन्न–भिन्न

हो सकती हैं क्योंकि एक परिवार गांव में रहता है दूसरा शहर में। उनका आय–प्रबंधन का तरीका भी भिन्न होगा, जोकि उनकी आवश्यकताओं और इच्छाओं पर निर्भर करेगा।

13.4 आय और व्यय का ब्यौरा रखना

अब जब आपने अपने परिवार की व्यय की योजना बना ली है तो यह आवश्यक हो जाता है कि आप अपनी योजना का अनुकरण करें। इसे करने के लिये आपको व्यय पर नियंत्रण करना होगा।

चित्र 13.6

एक साधारण तरीका है जिसमें आप दैनिक व्यय तथा आय का ब्यौरा रखें। दैनिक रिकार्ड का उदाहरण नीचे दिया गया है।

तालिका 13.1 आय तथा व्यय का रिकार्ड

दिनांक	आय	खरीदा	मात्रा	दर	व्यय	शेष
1.2.07	5000	चावल	15 कि०	Rs 10/कि०	150	
		आटा	20 कि०	Rs 10/कि०	200	
		चीनी	5 कि०	Rs 15/कि०	75	
		मक्खन	1/2 कि०	Rs 106/कि०	53	
					478	4522
2.2.07		राजमा	3 कि०	Rs 30/कि०	90	
		तेल	5 लीटर	Rs 52/lt.	260	
		साबुन	1/2 कि०	Rs 110/कि०	55	
		सूट पीस	2m.	Rs 60/m	120	
					525	3997
3.2.07		घी	2कि०	Rs 60/कि०	120	

रोजमर्रा के हिसाब के लिये आप एक नोट बुक का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसमें सामान की मात्रा, दर, और व्यय किए हुए धन का रिकार्ड अलग से रख सकते हैं। ऐसे

टिप्पणी

परिवार जहाँ दो–तीन आय के स्रोत हों, यह महत्त्वपूर्ण होता है। शेष राशि वाले कॉलम से पता चलेगा कि दिन के अंत में कितना पैसा बचा है। दिनभर में किये गये सभी व्यय को कुल आय में से घटाने पर शेष राशि का पता चलता है। उदाहरण के लिये तालिका 13.1 में दिनांक 1.2.07 को 478/– रु. कुल खर्च किया गया। इसलिये आय में से व्यय घटा कर, पहले दिन, 5000–478 = 4522/– शेष बचा। दूसरे दिन का व्यय 525/– रु. है। दूसरे दिन के अंत में शेष 4522–525 = 3997/– बचा। आप देखेंगे कि शेष राशि का कॉलम हर दिन घटता जायेगा। आपको कैसा लगता है जब आपका पैसा व्यय होता जाता है? हाँ, जहाँ आपने खर्च ज्यादा किया आपको अपने व्यय पर नियंत्रण लगाना पड़ेगा।

13.4.1 आय तथा व्यय के रिकार्ड रखने के लाभ

व्यय का रिकार्ड निम्नलिखित बातों में मदद करता है–

- अपने खर्च को समझने में कि कितना, किस–किस मद पर खर्च हुआ।
- अपने अनावश्यक खर्च पर नियंत्रण करने से शेष राशि देखकर आप परिवार के जरूरी खर्चों को समझ सकेंगे।
- अलग–अलग महीनों के खर्चों की तुलना कर पायेंगे–अगर पिछले महिने की अपेक्षा आपने इस महीने ज्यादा खर्च किया है तो आप हिसाब देखकर बता सकेंगे कि ज्यादा पैसे खर्च क्यों और कहाँ हुआ।
- भविष्य के लिये योजना–नियमित हिसाब रखने से आपको यह अन्दाज हो जाता है कि भविष्य में विभिन्न वस्तुओं पर कितना खर्च आवश्यक होगा।
- बाजार के बारे में सही जानकारी–दर वाले कॉलम से पता चलता है कि बाजार का भाव क्या है।

पाठगत प्रश्न 13.3

1. सही और गलत बतायें–
   (a) जब आपकी आय ज्यादा हो तभी आय प्रबंधन की महत्ता होती है।
   (b) जब आपकी आय कम हो तो उसका प्रबंधन अपने आप हो जाता है।
   (c) आवश्यकताएँ अधिक होने पर आय प्रबंधन का सवाल ही नहीं उठता।
   (d) जब इच्छाएँ बहुत ज्यादा हों, तो आय प्रबंधन उपयोगी होता है।
   (e) आय प्रबंधन का पहला चरण है अपनी आय का पता लगाना।
   (f) आय प्रबंधन व्यय का नियोजन व नियंत्रण है।
2. श्री सिंह का वेतन 10,000/–रु. प्रति माह है। यदि उनका व्यय 9 दिनों में

टिप्पणी

क्रमशः 2156/–रु., 1099/– रु., 756/– रु., 644/– रु., 500/– रु., 300/– रु., 402/– रु., 650/– रु., और 806/– रु., हो तो दसवें दिन कितना शेष बचेगा, गणना कीजिए।

क्रियाकलाप 13.1: अपने परिवार की आय और व्यय का रिकॉर्ड दो महीने तक रखिये और विभिन्न वस्तुओं पर किये गये व्यय की तुलना कीजिए।

13.5 अतिरिक्त आय के तरीके

यदि आप ऐसे परिवार में रहते हैं, जहाँ आय कम है और व्यय ज्यादा तो आप क्या करेंगे? जाहिर है, आप किसी भी तरह आय बढ़ाने की कोशिश करेंगे।

पारिवारिक आय को किसी तरह बढ़ाना ही अतिरिक्त पारिवारिक आय होता है।

आप यह कैसे कर सकते हैं?

- आय बढ़ाने के तरीके अपनायें – महिलाएं कभी–कभी अचार व मुरब्बे बना कर बेचती हैं, अपने समय, ऊर्जा और कौशल को सही ढंग से उपयोग कर वे धन कमाकर कुछ आय बढ़ाती हैं। कुछ महिलाएँ कपड़े सिलती हैं, कुछ बुनाई, खिलौने बनाने का कार्य करती हैं और कुछ ट्यूशन देती हैं। कोई भी क्रिया जो अतिरिक्त पैसा दे, आय उत्पादक क्रिया कहलाती है।

- अंशकालिक कार्य :– आपने अपने पड़ोस में, लड़के–लड़कियों और महिलाओं को घरों व दुकानों में दो घंटे, आधे दिन या पूरे दिन का काम करते देखा होगा। वे चाहे बच्चों की देखभाल करते हैं या लेखा देखते हैं। ऐसे काम जो सीमित समय में किये जाते हैं और जिनमें अपेक्षाकृत कम पैसा मिलता है, अंशकालिक कार्य कहलाते हैं। ऐसे कार्य खाली समय में किये जा सकते हैं और ये परिवार के अतिरिक्त आय के अच्छे साधन हैं।

- बचत के निवेश कर ब्याज कमाना–यदि आपके पास पैसा है तो उसका उचित निवेश कीजिए। निवेश करने से पैसा सुरक्षित रहता है, खर्चे से बच जाता है और साथ ही ब्याज भी मिलता है जोकि आपकी मासिक आय को बढ़ाता है।

- उपलब्ध संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग – यदि आपका मकान बड़ा है तो आप उस मकान का कुछ हिस्सा किराये पर दे सकते हैं। यदि आप अपना ट्रैक्टर सारे समय उपयोग में नहीं लाते तो दूसरे किसान को किराये पर दे सकते हैं।

- पारिवारिक आय को बढ़ाने का अर्थ केवल पैसा कमाना ही नहीं है बल्कि खर्चों में कुछ कटौती करके भी आय में वृद्धि की जा सकती है। जैसे छुट्टी पर ना जाना, अपने घर की सफाई स्वयं करना, कपड़े स्वयं धोना व प्रेस करना। इन कुछ तरीकों से व्यय की बचत हो सकती है। आप जानते हैं कि बचत किया गया पैसा भी एक तरह से कमाया हुआ पैसा है।

टिप्पणी

क्रियाकलाप 13.2: यदि आप पाक कला में निपुण हैं तो आप अपनी कला से कुछ अतिरिक्त धन कमा सकते हैं। कोई भी तीन तरीके बताइये जिनके प्रयोग से आप अपने परिवार की आय बढ़ा सकते हैं।

पाठगत प्रश्न 13.4

1. निम्नलिखित वाक्य सही हैं या गलत, बताइये। अपने उत्तर की, दो तर्क दे कर पुष्टि कीजिए–

   (a) अपने घर का हिस्सा व्यावसायिक भण्डारण के लिए देना आय का एक साधन है।

   .....

   .....

   (b) घरेलू कार्य के लिये एक नौकर रखना ताकि आप अंशकालिक कार्य कर सकें, अतिरिक्त आय का एक विकल्प है।

   .....

   .....

   (c) घर पर अतिरिक्त आय में जुटने की अपेक्षा बाहर जा कर कार्य करना बेहतर उपाय है।

   .....

   .....

   (d) धनोपार्जन की क्रिया ही पारिवारिक आय बढ़ाने का एक मात्र उपाय है।

   .....

   .....

13.6 बचत तथा निवेश क्या है?

जैसा कि आप पहले जान चुके हैं, पारिवारिक आय का वह भाग जो जानबूझ कर भविष्य के प्रयोग के लिए अलग रख दिया जाता है, बचत कहलाता है। बढ़ती मँहगाई और परिवार की दिनोंदिन बढ़ती आवश्यकताएं व इच्छाएं गृहणी के लिए बचत करना असंभव सा कर देती हैं। फिर भी, प्रत्येक परिवार के लिए यह अत्यावश्यक है कि वर्तमान आय में से कुछ अंश भविष्य के लिए जरूर बचाएं। हर महीने यह राशि जमा होती रहती है और परिवार के बचत के रूप में महत्त्व रखती है।

> वर्तमान आय में से जो धन आपात स्थिति या भविष्य की आवश्यकता के लिए अलग से रख दिया जाता है, वह 'बचत' कहलाता है।

टिप्पणी

13.6.1 'बचत' की आवश्यकता

आप चाहें किसी भी 'आय वर्ग' में आते हों पर आपको कुछ–न–कुछ धन अवश्य बचाना चाहिये। 'बचत' क्यों करनी चाहिये, इसके कई कारण हैं। इनमें से कुछ ऐसे कारण होते हैं जिन्हें हम जानते हैं पर कुछ ऐसे भी कारण हैं जिनसे हम अनभिन्न होते हैं और ये अचानक ही आ पड़ते हैं। बचत करने के कुछ कारण निम्नलिखित हैं–

सुरक्षित भविष्य के लिये – सेवानिवृत्ति के बाद पैंशन मिलती है जो कि आपकी मासिक तनख्याह के मुकाबले बहुत कम होती है। परन्तु परिवर के और अपने खर्चे लगभग वही रहते हैं। नौकरी के समय की हुई बचत इस समय अभाव को पूरा करने में मदद करती है। आप उस बचत के सहारे अधिक आराम से जीवनयापन कर सकते हैं। यह आराम का अहसास उन लोगों को और भी अधिक होता है जो इस प्रकार की नौकरी या काम से सैवानिवृत हुए हैं, जहाँ पेंशन नहीं मिलती और 'आय' शून्य हो जाती है।

आपात स्थिति का सामना करने के लिये – परिवार का कोई सदस्य अचानक गंभीर रूप से बीमार हो जाये या किसी दुर्घटना का शिकार हो जाये तो तुरन्त ही मेडिकल मदद, चाहे वह घर पर हो या अस्पताल में, चाहिए होती है। इस प्रकार की अचानक आई विपत्ति को आपातस्थिति कहते हैं। इस प्रकार की अनदेखी स्थितियों के लिये बचत करना आवश्यक है।

पारिवारिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिये – परिवार की किसी इच्छा को पूरा करने के लिये भी बचत जरूरी है। ऐसी कुछ इच्छाएँ या जरूरतें इस प्रकार की हो सकती हैं– जैसे पर्दे बदलना, नये कपड़े खरीदना, घर खरीदना, कार खरीदना या खेती के लिये ट्रैक्टर खरीदना। इसमें पहले दो काम सरलता से और कम व्यय में पूरे किये जा सकते हैं परन्तु घर, कार या ट्रैक्टर के लिये एक बड़ी राशि की जरूरत होती है इसके लिए धीरे–धीरे कई वर्षों तक 'बचत' करने की आवश्यकता है।

परिवार के रहन-सहन का स्तर बढ़ाने के लिये – यह तो स्वाभाविक ही है कि हम सब अपने–अपने घरों में अधिक से अधिक और अच्छी चीजों की इच्छा रखते हैं। कुछ उपकरण जिनसे जीवन स्तर ऊँचा उठता है जैसे वाशिंगमशीन, टेलीविजन आदि काफी मंहगे होते हैं। अपनी मासिक आय से इनको खरीदना कुछ कठिन ही होता है। आप इनके लिये बचत प्रारंभ कर सकते हैं और तभी खरीद सकते हैं, जब आपके पास पर्याप्त बचत राशि हो। यदि आप इन उपकरणों को शीघ्र खरीदना चाहते हैं तो किश्तों में पैसा देकर खरीद सकते हैं। इसमें आपको पैसा तो अधिक देना पड़ता है पर उपकरण के लाभ आपको शीघ्र मिल जाते हैं।

स्व-रोज़गार के लिये – हो सकता है आप स्वयं या आपके परिवार का कोई सदस्य कोई छोटा–सा उद्योग या व्यापार शुरू करना चाहता हो। इसके लिये आपको काफी धन की आवश्यकता होगी। आपकी बचत की जमापूँजी यहाँ आपकी मदद करेगी।

टिप्पणी

13.6.2 'बचत' के लिये निर्देश

आपकी 'बचत' अच्छी तरह संचित होती रहे इसके लिये सावधानीपूर्वक योजना बनानी चाहिये।

अपनी बचत योजना को व्यावहारिक बनाएं – जरा सोचिए कि यदि आपकी मासिक आय 5000/– है तो क्या आप 2000/– बचा सकते हैं? कदापि नहीं। आपकी पारिवारिक जरूरतें रु. 3000/– में कभी पूरी हो ही नहीं सकतीं। धीरे–धीरे कई महीनों में धन राशि अपनी जरूरत के हिसाब से जमा हो पाती है।

बचत की नियमित योजना बनाइये – अगर आप चाहते हैं कि भविष्य के लिये एक बड़ी राशि इकट्ठा हो जाये तो इसके लिये आपको कई वर्षों तक प्रति माह नियमित रूप से बचत करनी चाहिए।

बचत का एक निश्चित उद्देश्य बनाइय – मन में यदि उद्देश्य रख कर बचत की जाय, जैसे घर खरीदना, बच्चों की पढ़ाई, बेटी की शादी या कार खरीदना, आदि, तो बचत करना सरल हो जाता है।

पाठगत प्रश्न 13.5

1. दो–दो कारण बताइये जिनके लिए निम्न परिवारों को बचत करनी चाहिये–

   (a) श्री लाल एक मध्यमवर्गीय व्यक्ति हैं और एक प्राइवेट फर्म में काम करते हैं। उनकी दो पुत्रियां कॉलिज में पढ़ती हैं। श्रीमती लाल हृदयरोगी हैं।

   (b) श्री एवं श्रीमती गुप्ता 45 और 42 वर्ष की आयु के हैं। उनका एक स्कूली आयु का बेटा है, जो भविष्य में डाक्टर बनना चाहता है। यह मध्यमवर्गीय परिवार किराये के मकान में रहता है, इनकी इच्छा अपने जीवनस्तर को ऊपर उठाने की है।

   (c) श्री एवं श्रीमती अरोरा अधेड़ आयु के दम्पत्ति हैं, जिनके कोई सन्तान नहीं है। श्री अरोरा एक प्राइवेट फर्म में चार्टर्ड अकाउटेन्ट हैं और ये लोग एक किराये के मकान में रहते हैं।

13.6.3 निवेश

आप समझ चुके हैं कि आपकी बचत तुरन्त खर्च कर देने के लिये नहीं होती। बचत हमेशा भविष्य में उपयोग के लिय की जाती है। एक बात और–यदि आप अपनी बचत को घर में ही बक्से में बन्द के रखते हैं तो–

- वह बढ़ती नहीं

टिप्पणी

- उसके चोरी हो जाने का भी डर रहता है
- आप भी उसे अपनी तत्कालीन इच्छा को पूरी करने के लिये खर्च कर सकते हैं

ऊपर लिखी स्थिति से बचने के लिये पैसा किसी बैंक में या किसी अन्य संस्था में निवेश करें। इनमें आपकी बचत का पैसा सुरक्षित तो रहता ही है, साथ ही बढ़ता भी रहता है।

बचत का ऐसा उपयोग, जिससे बचत में वृद्धि हो 'निवेश' कहलाता हैं।

उदाहरण के लिए, आपने 10,000/– रुपये की बचत की है। यदि आप इस पैसे को घर में ही रखेंगे तो वर्षों बाद भी यह उतना ही रहेगा। पर यदि आप इस पैसे को बैंक में रखेंगे तो इस पैसे पर ब्याज भी मिलेगा और इस बचत में वृद्धि भी होगी।

इसी प्रकार कई अन्य तरीके भी हैं जिसमें आप अपने पैसे का निवेश कर सकते हैं। आप इस संबंध में और अधिक इस पाठ में आगे पढ़ेंगे। पर पहले यह जानना आवश्यक है कि कोई निवेश योजना आप कैसे और क्यों चुनें?

13.7 वित्तीय संस्थाओं का कार्य

वित्तीय संस्थाओं में अपना पैसा निवेश करने के कई लाभ हैं, जैसे–

(i) आपका धन सुरक्षित रहता है

(ii) आपके धन में वृद्धि होती है– संस्था द्वारा ब्याज दिया जाता है

(iii) जब भी आपको आवश्यकता हो, आप अपना धन वापस ले सकते हैं

(iv) वित्तीय संस्थाएं आपके निवेश पर ऋण भी देती हैं।

13.8 निवेश की संस्थाएँ

आप अपनी बचत का निवेश नीचे दी गई किसी भी संस्था में कर सकते हैं–

(i) बैंक

(ii) डाकघर

(iii) भविष्य निधि (Provident Fund)

(iv) जीवन बीमा निगम

(v) यूनिट ट्रस्ट ऑफ इंडिया

(vi) स्टॉक एक्सचेंज

(vii) निजी कम्पनियाँ

(viii) भूसंपत्ति या आभूषण।

टिप्पणी

(i) बैंक

जिस पैसे की आपको तुरन्त निकट भविष्य में आवश्यकता नहीं है, उसे आप बैंक में जमा कर सकते हैं। बैंक में पैसा जमा करने के लाभ निम्नलिखित हैं–

- आपकी धन राशि सुरक्षित रहती है।
- आपकी बचत में वृद्धि होती है, जमा किये धन पर आपको ब्याज मिलता है।
- जब भी आवश्यकता हो आप बैंक से अपना पैसा निकाल सकते हैं।
- अपने जमा किये हुए पैसे के आधार पर आप बैंक से ऋण भी ले सकते हैं।

बैंक में बचत खाता कैसे खोला जाता है?

बैंक द्वारा बनाए एक विशेष आवेदन पत्र पर आप बचत खाता खोलने का आवेदन कर सकते हैं। इस फार्म में सभी संबंधित बातें भरने के अलावा आपको पासपोर्ट साइज की फोटो और अपने नमूना हस्ताक्षर भी करने पड़ते हैं। किसी जाने–माने व्यक्ति द्वारा बैंक में आपका परिचय दिया जाता है, यह व्यक्ति बैंक का ग्राहक, बैंक का कर्मचारी या अन्य कोई जाना–माना व्यक्ति हो सकता है। इस प्रकार से बैंक को आपकी ईमानदारी, सच्चाई और वित्तीय स्थिरता का परिचय मिल जाता है। इसके बाद बैंक आपसे प्रारम्भिक धनराशि लेकर जमा कर लेता है। आपको बैंक निम्न पुस्तिकाऐं देता हैं–

चैक बुक – इसका प्रयोग बैंक से पैसा निकालने के लिये किया जाता है।

पास बुक – यह एक प्रकार के बैंक में जमा आपके खाते के हिसाब–किताब की प्रतिलिपि होती है।

बैंक खाता एक अकेला आदमी भी खोल सकता है या दो व्यक्ति मिलकर एक साथ संयुक्त खाता भी खोल सकते हैं। इसमें कोई भी व्यक्ति बैंक खाते की कार्यवाही कर सकता है। इसमें एक व्यक्ति का नामजद होना आवश्यक है।

आप किसी बैंक में बचत खाता केवल रु. 1000/– से खोल सकते हैं पर यह राशि बैंक द्वारा बदली भी जा सकती है।

> नामजद व्यक्ति वह होता है जो खाता धारक के मरणोंपरान्त जमा की गई राशि का उत्तराधिकारी होता है।

(ii) डाक-घर

डाक घर में पैसा निवेश करने के निम्नलिखित लाभ हैं–

1. ये सुविधाजनक स्थान पर बने होते हैं।
2. केवल 20 रु. की छोटी–सी राशि से डाकघर में खाता खोला जा सकता है (राशि बदली जा सकती है)।

3. डाकघर द्वारा चलाई बहुत सी योजनाओं में आपको आयकर नहीं देना पड़ता। जैसे 'राष्ट्रीय बचत पत्र' और 'इन्दिरा विकास पत्र'।

4. डाकघर की बहुत–सी योजनाओं के अनुसार आपको आयकर में छूट मिल जाती है।

डाकघर में भी खाता खोलने का तरीका वैसा ही है, जैसा बैंक में

क्रियाकलाप 13.3 : अपने पास के बैंक तथा डाकघर में जाकर उनमें उपलब्ध निवेश योजनाओं का पता लगाइये। इन योजनाओं पर आयकर में छूट के बारे में भी पता कीजिए।

(iii) भविष्य निधि (Provident fund)

नियमित वेतनभोगी सरकारी कर्मचारियों की वृद्धावस्था को सुरक्षा देने के लिये सरकार ने सेवानिवृत्ति लाभकारी योजना बनाई है जिसे भविष्य निधि के नाम से जाना जाता है। इस योजना का मुख्य उददेश्य है अनिवार्य रूप से बचत होना। सेवानिवृत्ति के समय मालिक ब्याज के साथ, वेतन में से अनिवार्य रूप से जमा किया हुआ पैसा कर्मचारी को चुकता कर देता है।

इस भविष्य निधि में जमा होने वाली राशि को सरकार देश के विकास कार्यों में लगा कर रखती है। इस प्रकार भविष्य निधि में पैसा निवेश कर आप दोहरे उद्देश्य की पूर्ति करते हैं।

- आप अपनी वृद्धावस्था के लिये पैसा सुरक्षित करते हैं।
- आप देश के विकास कार्यों में मदद करते हैं।

भविष्य निधि योजना के मुख्य गुण इस प्रकार हैं–

(i) प्रत्येक माह कर्मचारी के वेतन में से अनिवार्य रूप से कुछ निश्चित धनराशि इस योजना में जमा हो जाती है। यह भविष्य निधि योजना के लिये कर्मचारी का सहयोग होता है।

(ii) इस जमा राशि पर ब्याज भी जमा होता रहता है।

(iii) जमा की हुई राशि और उस पर लगा ब्याज, आयकर से मुक्त होता है।

(iv) आप इस जमा की गई राशि पर ऋण ले सकते हैं।

भविष्यनिधि योजना दो प्रकार की होती हैं-

(i) सामान्य भविष्य निधि (GPF) - यह सभी वेतनभोगी कर्मचारियों के लिए उपयुक्त होती है। इसमें कर्मचारी चाहे तो स्वेच्छा से अपने द्वारा जमा की जाने वाली राशि को बढ़ा सकता है। सेवा निवृत्ति के समय कर्मचारी को ब्याज के साथ पूरी रकम एक साथ मिल जाती है और यदि कर्मचारी को अपनी सेवा निवृत्ति से पूर्व बेटी की शादी या

टिप्पणी

गृहनिर्माण जैसे कार्यों के लिये धन चाहिये तो वह इस निधि से ऋण भी ले सकता है। यह राशि आसान किश्तों में वापस की जा सकती है।

(ii) लोक भविष्य निधि (PPF) – इसमें कोई भी स्व–रोजगार में लगा व्यक्ति स्टेट बैंक ऑफ इंडिया या डाक घर में खाता खोल सकता है। इसमें पैसा एक साथ या किश्तों में जमा किया जा सकता है। पांच वर्ष की अवधि के पश्चात् निवेशक अपनी जमा राशि का कुछ प्रतिशत वापस ले सकते हैं। यह निवेश योजना भी आयकर मुक्त होती है। इस योजना के निवेश के तहत भी आवश्यकता पड़ने पर ऋण लिया जा सकता है।

(iv) बीमा पॉलिसी – बीमा पॉलिसी के माध्यम से प्राकृतिक या मानव निर्मित कारणों से हुई हानि के लिये सुरक्षा मिलती है। जब कोई आदमी बीमा पालिसी लेता है उसे बीमा कम्पनी के साथ एक समझौता करना पड़ता है। समझौते के अनुसार बीमा करवाने वाले व्यक्ति को प्रति माह एक निश्चित रकम का भुगतान करना पड़ता है जिसे 'प्रीमियम' कहा जाता है। इसके बदले में बीमा कम्पनी बीमा करवाने वाले के नुकसान की पूरी कीमत अदा करती है।

बीमा दो प्रकार का होता है-

(i) सामान्य बीमा – इस प्रकार का बीमा चोरी, आग, बाढ़, सूखा आदि के नुकसान का पूरा हर्जाना देता है। इसमें ज्यादातर एक वर्ष का ठेका होता है। इसमें बीमित व्यक्ति निश्चित अवधि के अन्तराल पर प्रीमियम देता रहता है। प्रीमियम या बचत राशि इस बात पर निर्भर करती है कि ली गई पॉलिसी की कुल धनारशि कितनी है तथा कितनी अवधि के लिये है। बीमित व्यक्ति को यदि किसी कारण दुर्घटनावश कोई हानि होती है तो बीमा कम्पनी उस हानि के अनुसार पूरा पैसा बीमा वाले व्यक्ति को लौटाती है। जो हानि हुई है, उसका वास्तविक मूल्य या बीमा पॉलिसी की राशि, जो भी कम होता है वह चुकाया जाता है। इस पॉलिसी के कुछ लाभ इस प्रकार हैं–

- यह एक सरल और अनिवार्य रूप से बचत का तरीका है
- यह किसी भी हानि या दुर्घटना की सम्भावना के प्रति सुरक्षा प्रदान करती है

(ii) जीवन बीमा – यह भी एक प्रकार का प्रतिबन्ध है और निश्चित अवधि के अन्तराल में प्रीमियम देन पड़ता है। पॉलिसी की कुल राशि और कितने समय के लिये है, प्रीमियम इस बात से निर्धारित होता है। इस अवधि के समाप्त होने पर जमा की गई बचत की राशि ब्याज के साथ वापिस कर दी जाती है। यदि बीमित व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। पॉलिसी की रकम नामजद किये गये व्यक्ति को दी जाती है। नामजद किये गये व्यक्ति को ''लाभभोगी'' कहा जाता है।

जीवन बीमा के लाभ

- यह एक सुरक्षित निवेश है
- यह आर्थिक सुरक्षा देती है। मृत्यु या दुर्घटना होने पर आवश्यकतानुसार जमा किया पैसा मिल जाता है

- प्रीमियम में दी गई राशि पर आयकर से छूट मिली होती है
- यह अनिवार्य बचत करने का सरल तरीका है
- बीमा कम्पनी की पॉलिसी से जमा की गई धनराशि के आधार पर ऋण लिया जा सकता है।

क्रियाकलाप 13.4 : भारतीय जीवन बीमा निगम द्वारा दी गई कुछ लाभकारी पॉलिसियों के नाम मालूम कीजिये और समझिये कि ये पॉलिसी आपको किस तरह सहायता करती हैं।

(v) यूनिट खरीदना

आप अपने नाम से या अपने साथ किसी नाम को संलग्न करके भारतीय यूनिट ट्रस्ट से यूनिट भी खरीद सकते हैं। प्रत्येक यूनिट का खरीद मूल्य 10/– होता है। कम–से–कम 100 यूनिट आप एक बार में खरीद सकते हैं। प्रत्येक वर्ष जून के महीने में भारतीय यूनिट ट्रस्ट अपने लाभ में से कुछ अंश डिविडैन्ड के रूप में यूनिट धारकों को देती है।

यूनिट में निवेश करने के निम्न लाभ हैं–

- आप को नियमित ब्याज प्राप्त होता है।
- निवेश किये गये पैसे पर आपको आयकर से छूट मिल जाती है।
- डिविडैन्ड के रूप में आप जो राशि पाते हैं उस पर आयकर नहीं लगता।
- जब आपको धन की आवश्यकता हो तो आप अपने यूनिट प्रमाण–पत्रों को यू.टी. आई. को बेच सकते हैं। यू.टी.आई. समय–समय पर अपनी पुर्नखरीद योजनाएँ घोषित करती रहती है।
- आप किसी अन्य व्यक्ति के नाम पर यूनिट स्थानान्तरित कर सकते हैं।
- यह एक पूर्ण सुरक्षित निवेश है।

नोट : आयकर में छूट समय–समय पर सरकार की नीतियों के अनुसार बदल सकती है।

(vi) शेयर खरीदना

निजी कम्पनियाँ अपने विकास के लिये धनराशि अर्जित करने के लिये अपने शेयर जनता को बेचती हैं। जब आप किसी कम्पनी का शेयर खरीद लेते हैं तो आप उस कम्पनी के आंशिक साझेदार हो जाते हैं। साझेदार होने के कारण आपको कम्पनी में हुए लाभ और घाटे दोनों का ही हिस्सेदार बनना पड़ता है। अतः शेयर खरीदते समय अच्छी और स्थाई कम्पनियों को पता लगाकर ही शेयर खरीदना चाहिये।

इस तरह धनराशि को विवेश करने का सबसे बड़ा लाभ यह होता है कि कभी–कभी आप

टिप्पणी

बहुत शीघ्र बहुत बड़ा लाभ प्राप्त कर लेते हैं। परंतु हमेशा ऐसा नहीं होता। क्या टेलीविजन पर समाचार देखते सुनते हैं? सैनसैक्स समाचार में आप देखते होंगे कि सैनसैक्स या तो बढ़ता है या नीचे गिरता है। जब सैनसैक्स निम्न स्तर पर होता है तब आपको शेयर में घाटा होने की सम्भावना रहती है।

(vii) डिबैन्चर खरीदना

डिबैन्चर को बॉन्ड भी कहा जाता है। जब आप किसी कम्पनी के डिबैन्चर खरीदते हैं तो इसका अर्थ है कि आपने उस कम्पनी को अपना पैसा ऋण दिया है। उसके बदले में कम्पनी आपको आपकी निवेश की हुई धनराशि ही नहीं लौटाती पर निश्चित अवधि के अन्तर में नियमित ब्याज भी भेजती रहती है।

यदि हम इस प्रकार के निवेश की तुलना शेयर खरीदने से करें तो डिबैन्चर में निवेश करना अधिक सुरक्षित है। आपको अपना पैसा और ब्याज मिलेगा ही मिलेगा, चाहे कम्पनी को लाभ हो या घाटा।

(viii) भूसम्पत्ति तथा आभूषण में निवेश

यदि आपके पास काफी पैसा है तो आप इन दोनों में से कुछ भी या दोनों ही खरीद कर रख सकते हैं। जब इनके दाम बढ़े हुए हों और आपको आवश्यकता हो तो इनको बेच कर लाभ अर्जित कर सकते हैं।

इनमें निवेश करने में कठिनाई यह आती है कि हो सकता है जब आप भूसम्पत्ति बेचना चाहें तो आपको कोई खरीदार जल्दी न मिले। इसी प्रकार आभूषणों को बेचने के समय बट्टा टांका आदि के रूप में घाटा उठाना पड़ता है। पैसे की आवश्यकता पड़ने पर आप भूसम्पत्ति या आभूषण को गिरवी भी रख सकते हैं।

नीचे दिए चार्ट के माध्यम से विभिन्न निवेश संस्थाओं की योजनाओं में निवेश करने से जमा राशि की सुरक्षा, धन निकासी की सरलता अथवा तरलता, अच्छी वृद्धि, आयकर से छूट और ऋण संबंधी विशिष्टताओं को समझा जा सकता है।

तालिका 13.2
निवेश योजना का चयन

संस्था	सुरक्षा	तरलता	जमाराशि की अच्छी वृद्धि	आयकर से छूट	ऋण सुविधा
बैंक	√	√	√	–	√
डाकघर	√	–	√	√	–
राष्ट्रीय बचत पत्र	√	–	√	√	–
सामान्य	√	–	√	√	√

भविष्य निधि					
लोक भविष्य निधि	√	–	√	√	√
सामान्य बीमा	√	–	√	–	–
जीवन बीमा	√	–	√	√	√
यूनिट ट्रस्ट	√	√	√	√	–
शेयर	–	–	√	–	–
डिबैंचर					
भूसंपत्ति/ आभूषण	–	√	√	–	–

क्रियाकलाप 13.5 : अपने क्षेत्र की कुछ निवेश संस्थाओं में ऊपर दी गई विशिष्टताओं का पता लगाइये और ऊपर दी गई तालिका में बताइए।

13.7.2 निवेश योजना के चुनाव को प्रभावित करने वाले कारक

बैंक में तथा अन्य बचत संस्थाओं में कई तरह की निवेश योजनाएँ हैं जो अलग–अलग आय के व्यक्तियों के लिये होती हैं। किसी भी योजना में अपना पैसा लगने से पहले आप नीचे लिखी बातों पर अवश्य ध्यान दें–

आपकी 'बचत' की क्षमता – यदि आप थोड़ी–थोड़ी बचत कर पाते हैं तो आप ऐसी योजना न चुनें जिसमें कम–से–कम जमा करने वाली रकम बहुत अधिक हो।

निवेश की सुरक्षा – बचत करना आसान नहीं है– आपने बहुत परिश्रम से, कुछ जरूरतों को पूरा न करके कुछ राशि जमा की। अतः निश्चय ही आप चाहेंगे कि आपकी बचत पूर्ण रूप से सुरक्षित हो। अपने निवेश के लिखित प्रमाण पत्र बहुत सुरक्षित रखें। और ध्यान रखें कि कुछ ऐसी भी योजनाएँ होती हैं जो बाजार के उतार चढ़ाव के कारण ब्याज नहीं दे पातीं–ऐसी योजना से बचना चाहिए।

ब्याज की उच्च दर – जितनी अधिक लम्बी अवधि के लिये आप अपना पैसा किसी संस्था में लगायेंगे, उतनी ही ब्याज की दर भी बढ़ जाती है। साथ ही अलग–अलग संस्थाएँ अलग–अलग अवधि के लिये अलग–अलग ब्याज देती हैं। ऐसी संस्थाएँ जो तुरन्त पैसा चाहती हैं, ब्याज की दरें ऊँची रखती हैं। पैसा लगाने से पहले आपको संस्था की विश्वसनीयता की परख भली–भाँति कर लेनी चाहिए।

तरलता (सरलता से धन की वापसी) – कभी–कभी गृहस्थी में ऐसा समय आ जाता

है कि आपको अचानक अपना जमा किया हुआ पैसा वापस चाहिये होता है। तरलता से आप अपनी निवेश की हुई बचत को जरूरत के समय सरलता से निकाल सकते हैं। कुछ ऐसी संस्थाएँ हैं, जहाँ निश्चित अवधि से पहले आप पैसा वापस निकाल ही नहीं सकते। अपनी पूरी 'बचत' यदि आप ऐसी योजनाओं में निवेश कर देंगे तो जरूरत के समय आपको पैसा वापस लेने में बहुत कठिनाई होगी।

अन्य लाभ – ब्याज की उच्च दरों के अतिरिक्त संस्थाएँ दूसरे कुछ लाभ भी देती हैं, जैसे डिविडेन्ड लाभांश और आयकर से छूट।

क्रय शक्ति – निवेश की अवधि समाप्त होने पर आपकी धन की वृद्धि की कीमत उस समय की बढ़ी हुई महंगी कीमतों के बराबर या दुगनी होनी चाहिये।

निवेश का सुविधाजनक स्थान – अधिकतर 'निवेश' में लिखा–पढ़ी बहुत होती है। यदि वह संस्था आपके लिए सुविधाजनक स्थान पर होगी तो बिना अधिक समय बर्बाद किये आप अपने काम कर सकते हैं।

13.7.3 वित्तीय संस्थाओं की अन्य सुविधाएं

बचत के अतिरिक्त, वित्तीय संस्थाएं हमें निम्न सुविधाएं उपलब्ध कराती हैं:

(i) क्रेडिट कार्ड

(ii) डेबिट कार्ड

(iii) ए.टी.एम. कार्ड

(iv) ऋण

(v) ई बैंकिंग

आइये, इनके बारे में और जानें।

(i) क्रेडिट कार्ड

चित्र 13.8: क्रेडिट/डेबिट कार्ड

अधिक बैंक अपने उपभोक्ताओं को क्रेडिट कार्ड की सुविधा देते हैं। बैंक द्वारा अधिकृत विक्रताओं से उत्पाद एवं सेवाएं खरीदने के लिए इस कार्ड का प्रयोग किया जा सकता है। इस कार्ड को 'प्लास्टिक मनी' भी कहा जाता है क्योंकि यह प्लास्टिक का बना होता है। कार्ड जारी करते समय प्रत्येक उपभोक्ता की अग्रिम राशि लेने की सीमा निर्धारित की जाती है। आप अपने क्रेडिट कार्ड से ऑटोमेटिड टैलर मशीन (ए.टी. एम) से पैसा भी निकाल सकते हैं। महीने के अंत में आपके पास बैंक से, आपके द्वारा प्रयुक्त राशि का ब्यौरा आता है। आपको उस राशि का भुगतान करना होता है।

टिप्पणी

यदि पूरी रकम का भुगतान न किया जाये तो बहुत ऊँची दर पर ब्याज लिया जाता है। अतः क्रेडिट कार्ड का प्रयोग ध्यानपूर्वक किया जाना चाहिए।

(ii) डेबिट कार्ड

यह क्रेडिट कार्ड जैसा ही है। इनमें निम्न अंतर हैं:

- यह कार्ड आपके बैंक के खाते पर जारी किया जाता है
- जब आप इस कार्ड से किसी का भुगतान करते हैं तो पैसा आपके बैंक के खाते से निकलता है
- इस प्रकार आप बैंक से अग्रिम राशि लेने के स्थान पर अपना ही पैसा खर्च करते हैं।

(iii) ए.टी.एम. कार्ड

आप अपने क्रेडिट/डेबिट कार्ड का प्रयोग कर किसी भी ए.टी.एम. से कभी भी पैसा निकाल सकते हैं (24 घण्टे सेवा)। ए.टी.एम. कई स्थानों पर स्थित होते हैं जैसे बैंक के बाहर, बाज़ार में, कॉलोनी में, स्टेशन पर, बस अड्डे पर, इत्यादि। इस प्रकार आपको 24 घण्टे पैसा उपलब्ध होता है, चाहे बैंक खुला हो या नहीं। क्रेडिट कार्ड से पैसा निकालने पर ऊँची दर पर ब्याज लगता है पर डेबिट कार्ड द्वारा पैसा आपके अपने खाते से निकलता है अतः कोई ब्याज नहीं लगता।

(iv) ऋण

आज वित्तीय संस्थाएं कई कार्यों के लिए ऋण देती हैं जैसे व्यक्तिगत ऋण; शिक्षा के लिए; घर, कार, घर का सामान आदि खरीदने के लिए; भवन के रख रखाव के लिए; व्यवसाय के लिए, आदि। ऋण पर ब्याज की दर निर्भर करती है ऋण के उद्देश्य, ऋण राशि, भुगतान अवधि तथा वित्तीय संस्था के प्रकार (सरकारी/निजी) पर। ऋण का भुगतान आसान मासिक किश्तों में किया जा सकता है। ऋण प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को गारंटी तथा/अथवा बॉण्ड तथा/अथवा सावधि जमा/एन.एस.सी. /भूसम्पति/आभूषण के रूप में ऋणाधार बैंक को देना पड़ता है।

(v) ई बैंकिंग

आप आपको एक बटन दबाते ही इन्टरनेट से निम्न सेवाएं प्राप्त हो सकती हैं:

- अपने बैंक के खाते में शेष राशि का पता लगाना, चेक बुक/ड्राफ्ट के लिए आवेदन करना, क्रेडिट कार्ड का भुगतान करना;
- वस्तुएं या सेवाएं खरीदना;
- रेल या हवाई यात्रा के लिए टिकट खरीदना;
- अपने टेलीफोन, बिजली, पानी के बिल का भुगतान करना।

ऐसा करने से बैंक या अन्य स्थानों पर जाने में आपका समय बचता है।

टिप्पणी

आपने क्या सीखा

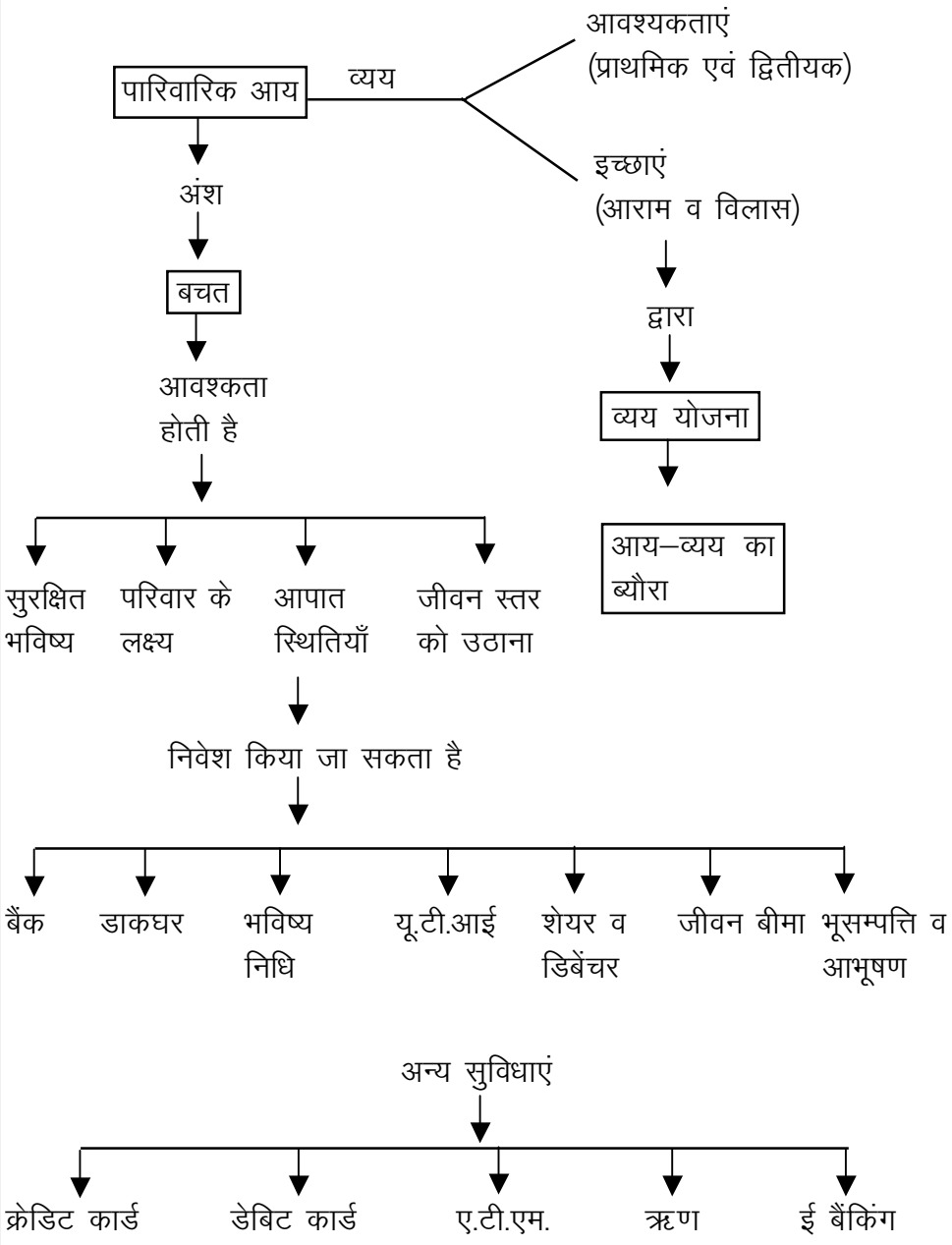

पाठान्त प्रश्न

1. दिए गए अक्षरों को पुर्नव्यवस्थित करके सही उत्तर लिखिए:

(a)	प्रतिदिन का लेखा रखना	रा यौ ढ
(b)	आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद इनकी पूर्ती करना चाहेंगे	छा इ एं च
(c)	वस्तुएं व सेवाएं खरीदने पर खर्च धन	य य ट
(d)	परिवार की आवश्यकताओं व इच्छाओं की पूर्ति के लिए उपलब्ध धन	य आ
(e)	भविष्य के लिए रखा धन	त ब च
(f)	बचत को सुरक्षित रखना	वे श नि
(g)	बचत की सरल संस्था	क र डा घ
(h)	मृत्यु या दुर्घटना में सुरक्षा	न मा जी बी व
(i)	एन.एस.सी. में निवेश से यह लाभ मिलता है	क छू आ र ट य
(j)	अनिवार्य बचत के रूप में वेतन से मासिक कटौती	भ नि य धि ष वि
(k)	बचत का स्थाई रूप	प सं भू त्ति

2. निवेश किसे कहते हैं?

3. छोटे पैमाने पर निवेश करने के क्या तरीके हैं?

4. निवेश के तरीके का चयन करने से पहले आप किन कारकों की जाँच करेंगे?

5. यदि आप परिवार के अकेले कमाने वाले हैं तो आप किस में निवेश करेंगे? कारण बताइये।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

13.1 1. (a) वा. आय (b) न. आय (c) न. आय (d) वा. आय (e) न. आय (f) वा. आय (g) न. आय (h) वा. आय (i) वा. आय

टिप्पणी

2. (a) श्री आनंद

(b) घर का किराया दोपहर के भोजन व पैट्रोल खर्च से अधिक है। अतः श्री आनंद घर के किराए व यातायात खर्च में बचत कर रहे हैं जो श्री लाल की बचत से ज्यादा है।

13.2 1. (a) फ्रिज खरीदना

(b) पौष्टिक भोजन खरीदना

(c) मिक्सर – ग्राइन्डर खरीदना

(d) गर्म कपड़े खरीदना

(e) अपना घर खरीदना

13.3 1. (a) गलत – हर प्रकार की आय का प्रबंधन करना आवश्यक है।

(b) गलत – कम आय के प्रंबधन की भी आवश्यकता होती है।

(c) गलत – सारी आवश्यकताओं की पूर्ती के लिए आय के बेहतर प्रबंधन की आवश्यकता है।

(d) सही – आय का स्पष्ट ब्यौरा प्रबंधन में सहायता करता है।

(e) गलत – आय तथा व्यय पर नियंत्रण ही आय प्रबंधन है।

2. 26870/– रु. दसवें दिन की शेष राशि है।

13.4 (a) गलत – विषैले पदार्थ रखने से आग/दुर्घटना की संभावना हो सकती है। यह गैर कानूनी हो सकता है।

(b) गलत